IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय ता के मुख्य निर्माणक तत्व

डॉ. वानखेडे उमाकांत ज्ञानोबा
नवगण कला और वाणिज्य
महाविद्यालय परली वैजनाथ
जि. बीड. (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :–

जब किसी समाज मे सभी व्यक्ती किसी निर्दिष्ट भौगोलिक सीमा के अंदर अपने पारस्परिक भेदभावों को भूलाकर सामूहीकरण की भावना से प्ररित होते हुए एकता के सूत्र में बन्ध जाते है उसे राष्ट्र के नाम से पुकारा जाता है। राष्ट्रवादीयो का कहना है की व्यक्ति राष्ट्र के लिए है राष्ट्र व्यक्ति के लिए नही। इस दृष्टी से प्रत्येक व्यक्ती अपने राष्ट्र का अभिन्न अंग होता है। राष्ट्र से अलग होकर उसका कोई अस्तित्व नही होता है। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र की दृढता तथा अखंडता को बनाये रखनेमे पूर्ण सहयोग प्रदान करे। राष्ट्र को शक्तीशाली बनाने के लिए राष्ट्रीयता की भावना महत्वपूर्ण होती है। वास्तवमें राष्ट्रीयता एक ऐसा भाव अथवा शक्ति है जो व्यक्तियों को अपने व्यक्तिगत हितो को त्याग कर राष्ट्र कल्याण के लिए प्रेरित करती है। राष्ट्रीयता की भावना विकसित हो जाने से राष्ट्र कि सभी छोटी तथा बडी सामाजिक इकाइयाँ अपनी संकुचित सीमा के उपर उठकर अपने आप को समस्त राष्ट्र का अंग समझने लगती है राष्ट्रीयता और देशप्रेम का एक ही अर्थ लगा लिया जाता है लेकिन यह उचित नहीं है। देशप्रेम की भावना तो प्राचीन काल से ही पाई जाती है परंतु राष्ट्रीयता की भावना का जन्म केवल 18 वीं शताब्दी में फ्रांस की महान क्रांती के पश्चात ही हुआ है। देश प्रेम का अर्थ उस स्थान से प्रेम रखना है जहाँ व्यक्ति जन्म लेता है। उसके विपरित राष्ट्रीयता एक उग्र रूप का सामाजिक संगठन है जो एकता के सूत्र बन्धकर सरकार की नीति को प्रसारित करता है। यहीं नही राष्ट्रीयता का अर्थ केवल राज्य के प्रति अपार भक्ति ही नही अपितु इसका अभिप्राय राज्य तथा उसके धर्म, भाषा, इतिहास तथा संस्कृती मे भी पुर्ण श्रद्धा रखना ह।

राष्ट्रीयता का अर्थ –

राष्ट्रीयता किसी विशेष राष्ट्र से संबंधित होने की कानूनी स्थिती है, जिसे एक देश मे संगठीत लोगों के समूह के रूप में एक कानुनी अधिकार क्षेत्र के तहत या संस्कृती के आधारपर एकजूट लोगों के समूह के रूप मे परिभाषित किया जाता है।

राष्ट्रीयता की परिभाषाः–

1) ब्रबेकर ने राष्ट्रीयता की व्याख्या करते हुए लिखा है की "राष्ट्रीयता शब्द की प्रसिध्दि, पुनर्जागरण तथा विशेष रूप से फ्रांस की क्रांती के पश्चात हुई है। यह साधारण रूप से देशप्रेम की अपेक्षा देश भक्ति से अधिक क्षेत्र की ओर संकेत करती है। राष्ट्रीयता में स्थान के संबंध के अतिरिक्त प्रजाती, भाषा तथा संस्कृति एवं परंपराओं के भी संबंध आ जाते है।

2) हॉलेण्ड के अनुसार, "राष्ट्रीयता एक ऐसी अध्यात्मिक भावना है जो लोगों को राजनीतिक रूप में एकता के बंधन मे रहने के लिए प्रेरित करती है।

राष्ट्रीयता के मुख्य निर्माणक तत्वः–

राष्ट्रीयता जन्म से ही माता–पिता से विरासत में प्राप्त होती है। राष्ट्र शब्द लैटिन शब्द नास्की से लिया गया है, जो एक ही स्थान से संबंधित लोगों के समूह को संदर्भित करता है। राष्ट्रीयता एक सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक भावना है, जो लोगों को एकता के सूत्र में बाँधती है। इसी भावना के कारण लोग अपने राष्ट्र से प्रेम करते है। राष्ट्रीयता के निर्माण अथवा राष्ट्रीयता की भावना के विकास में अनेक तत्व सहायक होते है। उनका संक्षिप्त विवरण निचे दिया गया है।

1) भौगोलिक एकता :–

राष्ट्रीयता निर्माण मे भौगोलिक एकता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भौगोलिक एकता एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकी यह लोगों के बीच एक सामान्य बंधन बनाता है। भौगोलिक एकता से राष्ट्रीयता का विकास होता है। जब लोग समान भौगोलिक परिस्थितीयों मे रहते है तो उनकी आवश्यकताएँ और समस्याएँ भी समान होती है। अतः वे लोग मिल–जूलकर समान ढंग से अपनी समस्याएँ सूलझाने के लिये एकजूट होते है। भौगोलिक एकता यह राष्ट्रीयता का सहायक तत्व माना जाता है। रूथना स्वामी राष्ट्रीयता के बारे में कहते है की, "राजनीति हमे बाँटती है, धर्म हमारे बीच दीवारें खडी कर दते है, संस्कृती हमे एकदूसरे से पृथक करती है, किन्तू देश और धरती का प्रेम हमे एक सूत्र में बाँधता है। भौगोलिक एकता के विकास के अभाव मे राष्ट्रीयता का विकास असंभव है।

2) भाषिक एकता

भाषा की एकता भो राष्ट्रीयता के प्रारंभिक विकास मे सहयोगी होती है। भाषा से लोगों में पारस्पारिक निकटता निर्माण होती है। समान आदर्श तथा समान संस्कृती को बढ़ावा मिलता है तथा राष्ट्रीय एकता में वृद्धी होती है। समान भाषा रहने वाले देशों मे समान विचार एवं समान साहित्य का सृजन होता है। उनक समान रिती रिवाज एवं समान रहन–सहन के कारण उनमें समान राष्ट्रीयता की भावना का उदय होता है।

3) धार्मिक एकता :

एकही धर्म के लोगोंमे राष्ट्रीयता की भावना शीघ्र गती से उत्पन्न हो जाती है। धर्म लोगों को एकता के सूत्र में बाँधकर रख सकता है। राष्ट्रीयता के निर्माण में धार्मिक एकता का महत्व पूर्ण योगदान रहता है। धार्मिक एकता से राष्ट्रीयता के विकास मे वृद्धी होती है। इतिहास इस बात का साक्षी है की, धार्मिक भिन्नता के कारण अनेक देशोंमे कितना अधिक रक्तपात हुआ है। धार्मिक भिन्नता के आगे राष्ट्रीयता की भावना दुर्बल पड जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप दो भिन्न धर्मावलम्बी राष्ट्रों के मध्य युद्ध होते है। रैम्स म्योर लिखते है की कुछ मामलों मे धार्मिक एकता राजनीतिक एकता के निर्माण में शक्तीशाली योग देती है जब की कुछ दूसरे मामलो में धार्मिक भिन्नता उसके मार्ग में अनेक बाधाएँ उपस्थित करती है।

4) सांस्कृतिक एकता :–

सांस्कृतिक कि एकता इसे कहते की जब एक संस्कृती के लोग अपनी संस्कृती को बनाए रखते हुए दूसरे के संस्कृति के सार को स्विकार करते है। अपनी संस्कृती को खोने या अपनी संस्कृती को बनाए रखने और नई संस्कृती को पूरी तरह से खारीज करने के बजाय वे दोनों को जोडते संगीत कला, दृष्टीकोण या परंपराओं के रूप में अपने समूदायों मे लाते हैं। वे अपनी नई संस्कृती के कुछ हिस्सों को भी अपनाते है और स्थानीय रीती–रिवाजों और बातचीत के तरीकों को अपनाते है। सांस्कृतिक एकता यह राष्ट्रीयता निर्माण का महत्वपूर्ण तत्व है, संस्कृती क अंतर्गत एक निश्चित भू–भाग के व्यक्तियों का साहित्य रीती–रिवाज, प्राचीन परंपरा इत्यादी सम्मिलित होती है। समान संस्कृती के आधारपर, समान विचार, समान आदर्श तथा समान प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती है।

5) राजनीतिक एकता :–

राष्ट्रीयता की शिक्षा से देश में राजनीतिक एकता का विकास होता है। राजनीतिक एकता का अर्थ है, "राष्ट्र में जातीयता प्रांतीयता तथा समाज के वर्ग भेदोंसे उपर उठाकर राष्ट्र के विभिन्न प्रातों, सामाजिक इकाईयों तथा जातीयों मे एकता का होना। समान राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत रहनेवाले लोग भी एकता का अनूभव करते है। इसके अतिरिक्त वे समान राजनीतिक व्यवस्था के परिणाम स्वरूप मानसिक एकता का भी अनूभव करते है, जो आगे चलकर राष्ट्रीयता के निर्माण मे सहायक होती है। इसके साथ ही कठोर विदेशी शासन भी राष्ट्रीयता के निर्माण मे सहायक सिध्द होता है।

6) समान इतिहास :–

इतिहास क अंतर्गत हम जिस विषय का अध्ययन करते है उसमे अब तक घटित घटनाओं या उससे संबंध रखने वाली घटनाओं का कालक्रमानुसार वर्णन होता है। दूसरे शब्दों ये हम ऐसा कह सकते है की मानव की विशिष्ट घटनाओका नाम ही इतिहास है। या फिर प्राचीनता से नवीनता की ओर आने वाली मानवजाति से संबंधित घटनाओं का वर्णन इतिहास है। समान इतिहास भी राष्ट्रीयता के विकास के लिए महत्वपूर्ण तत्व है। जिन लोगों का समान इतिहास होता है, उनमें एकता की भावना का होना स्वाभाविक है।

सारांश :–

प्रत्येक देश की प्रगती अथवा अधोगती इस बात पर निभर करती है की उसके नागरीकों में राष्ट्रीयता की भावना किस सीमा तक विकसित हुई है। यदी नागरीक राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत है तो राष्ट्र प्रगती के शिखर पर चढ़ता रहेगा अन्यथा उसे एकदिन रसातल को जाना होगा। राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने के के लिए शिक्षा की जरूरत है। राष्ट्रीयता के निर्माण मे भौगोलिक एकता भाषिक एकता धार्मिक एकता, सांस्कृतिक एकता, राजनीतिक एकता समान इतिहास इनका स्थान महत्वपूर्ण होता है।

संदर्भ सूची :–

1 sarthaks econnect

2 www.longdom.org

3 www.jagran.com

4 infinitylearn.com

5 www.sarthaks.com

6 www.lawinsider.com